International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
e-ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(II), January - March, 2026, pp. 124-131

राजस्थान में ग्रामीण विकास और मीडिया की भूमिका पर एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. पूजा व्यास*

सहायक आचार्य, लार्ड बुद्धा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस कॉलेज, रानपुर, कोटा, राजस्थान।

*Corresponding Author: poojasharma60705@gmail.com

Citation: व्यास, पूजा (2026). राजस्थान में ग्रामीण विकास और मीडिया की भूमिका पर एक भौगोलिक विश्लेषण. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(01(II)), 124–131. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.1(II).8705

सार

आज का युग मीडिया का युग है एवं मीडिया वर्तमान में युद्ध का सशक्त हथियार है और समाज के विकास एवं सुधार का सहायक माध्यम है। इंटरनेट, टीवी और सोशल मीडिया आम आदमी की जीवन शैली में अहम भूमिका निभाते हैं। उनकी सोच, विचारधारा तथा सुझाव मीडिया द्वारा तय और नियंत्रित होते हैं। मीडिया का प्रभाव आज जितना शहरीकरण के विकास में हुआ है उतना ही ग्रामीण विकास में भी सहायक सिद्ध रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि आज की दुनिया मीडिया की दुनिया है और मीडिया की दुनिया की राजनीति, अर्थव्यवस्था, बाजार, चुनाव और सामाजिक जीवन के किसी भी क्षेत्र का निर्णय लेने में सक्षम है। प्रस्तुत पेपर में हम राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में मीडिया की भूमिका पर भौगोलिक चर्चा करेंगे।

शब्दकोशः *ग्रामीण सभ्यता, ग्रामीण विकास, मीडिया, जन जागरण, इंटरनेट।*

प्रस्तावना

आधुनिक समाज में जनसंचार के साधन मानसिक स्तर पर बहुत गहरा प्रभाव डालते हैं। इसलिए यह विषय भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन का एक दिलचस्प विषय रहा है। संचार के व्यवस्थित अध्ययन में भौगोलिक रुचि का पता 1930 के दशक में रिचर्ड हॉर्टशार्न के लेखन से लगाया जा सकता है। 1930 के दशक की शुरुआत में नई मीडिया प्रौद्योगिकी थी। विशेषकर रेडियो और प्रिंट मीडिया में निहित शक्ति और क्षमता का अध्ययन किया गया। 1950 और 1960 के दशक के दौरान संचार का एक बहुत अलग पहलू फोकस बन गया क्योंकि भूगोलवेत्ताओं ने स्थानों के बीच की दूरी और बातचीत को मापन और मॉडर्न से बनाना शुरू किया। इसमें मात्रात्मक क्रांति के तहत "समय–स्थान अभिसरण" और "मानव–विस्तारशीलता" के संदर्भ में स्थानों के बीच सूचना के तुरंत प्रवाह को समझाया। पिछले दो दशकों में संचार पर शोध करने वाले भूगोलवेत्ताओं ने क्षेत्रों के निर्माण के लिए संचार के महत्व, स्थानिक संपर्क के एक उपाय के रूप में सूचना प्रवाह की दर व परिदृश्य और प्रतिनिधित्व के बीच संबंध के बारे में प्रारंभिक अंतरदृष्टि को आगे बढ़ते हुए इन शोध क्षेत्र का विस्तार किया है।

संचार (मीडिया) के क्षेत्र में अध्ययन को चार भागों में विभाजित किया जा सकता हैः

- मीडिया सामग्री का अध्ययन जो (मीडिया) संचार उत्पादन की सांस्कृतिक गुणवत्ता या विशिष्ट अभिविन्यास और प्रभावों से संबंधित है। उदाहरण के लिए रूढ़िवादिता या हिंसा और असामाजिकता के

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

व्यवहार प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने वाले टेलीविजन कार्यक्रमों विशेशकर बच्चों के टेलीविजन कार्यक्रमों का अध्ययन इसके अंतर्गत किया जाता है।

- संचार स्वामित्व नियंत्रण पैटर्न एवं अधिकांश कार्यक्रमों के विषयों का अध्ययन।
- एकीकृत ग्रामीण जीवन और लोगों के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले संचार के वैचारिक प्रभाव।
- भौगोलिक दशाओं पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव जैसे भौगोलिक या जलवायु संबंधी समस्याओं से जनता का ध्यान भटकाना या हटाना, विज्ञापन आदि का उपयोग करना।

बड़े पैमाने पर भौगोलिक दृश्य को सरल बनाने के लिए फिल्टरिंग योजनाओं में विशेष जानकारी पर हमेशा विचार किया जाता है। चर्चा की गई कि वर्तमान में इस क्षेत्र में अधिक काम हो रहा है। कंप्यूटर, इंटरनेट और ईमेल जैसी कई नई तकनीकों ने ग्रामीण क्षेत्रों में संचार क्रांति उत्पन्न कर दी है।

इस शोधपत्र में हम भौगोलिक सोशल मीडिया, डेटासेट की व्यवहारिक अन्वेषण हेतु एक दृश्य प्रणाली का प्रस्ताव करते हैं। सबसे पहले जनसंचार न्यादर्शों के शब्दों का वास्तविक आकार व संरचनाओं का मूल्यांकन करने के लिए संभाव्य विषय, नमूनाकरण, आयोजित की जाती है। जिसके अनुसार हम आँकड़ों को विभिन्न विशय में वर्गीकृत करते हैं।

भारत में इंटरनेट उपयोगकर्त्ताओं का चरित्र वर्चस्ववादी है। इसमें शहरी, युवा व पुरुष का वर्चस्व स्पष्ट देखा जा सकता है। अधिकांश ग्रामीण और अन्य आयु वर्ग की आबादी इस संचार मीडिया का उपयोगकर्ता के दायरे से बाहर है। इसे निम्न आंकड़ों से समझा जा सकता है।

आंकड़े–

नवीनतम आँकड़ों के अनुसार

इंटरनेट उपयोगकर्ता	:	243 करोड़	19 प्रतिशत
सक्रिय उपयोगकर्ता	:	106 करोड़	08 प्रतिशत

70% आबादी तक मोबाइल की पहुंच किंतु मोबाइल पर सक्रिय रूप से इंटरनेट का उपयोग करने वालों में से केवल 15% ही है और सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले 7% ही है ब्रॉडबैंड की पहुंच 4.9% आबादी तक है। यहाँ 69% यानी 88–90 करोड़ लोग गांव में निवास करते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के गांव में 59 करोड़ लोगों ने अपने जीवन में काम से कम एक बार इंटरनेट का उपयोग किया है। केवल 49 करोड लोग सक्रिय रूप से इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं।

ग्रामीण पृष्ठभूमि के इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में मुख्य रूप से इसका उपयोग

मनोरंजन	– 75%
संचार	– 56%
ऑनलाइन सेवाएं	– 50%
ई–कॉमर्स	– 34%
सोशल नेटवर्किंग	– 39%
ऑनलाइन वित्तीय लेनदेन	– 13%
ग्रामीण जरूरतें	– 16%

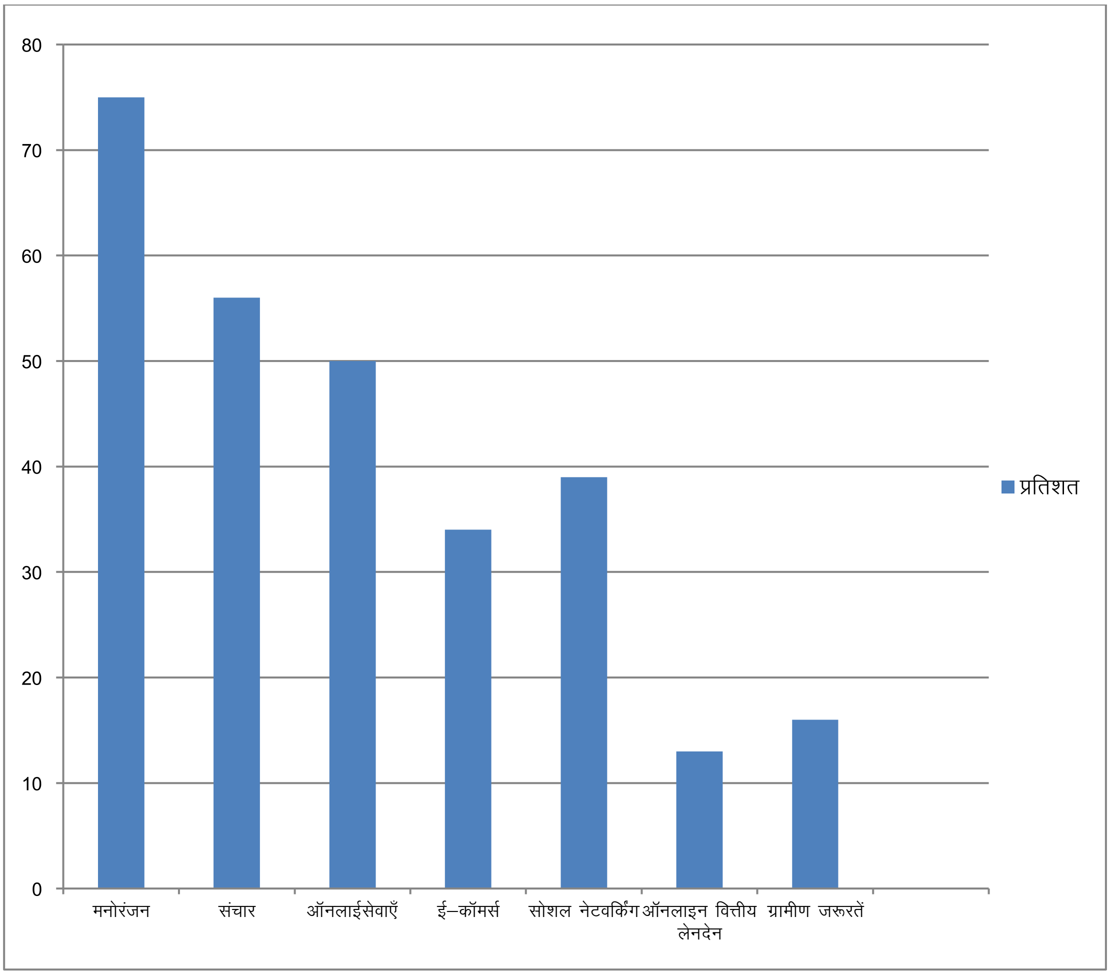

ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के लिए भाषा को एक बहुत बड़ी बाधा के रूप में देखा गया है। ऐसे क्षेत्रों में उपभोक्ता इंटरनेट का उपयोग करते समय किसी न किसी की मदद लेते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध प्रक्रिया में उद्देश्य की स्पश्टता शोध को दिशा–निर्देश प्रदान करती है। प्रस्तावित शोध विशय भारत में ग्रामीण विकास और मीडिया के उद्देश्य निम्न हैं।

- ग्रामीण क्षेत्र में मीडिया की पहुंच ज्ञात करना।
- ग्रामीणों द्वारा मीडिया के विषय में उनकी रुचि जानना।
- कृषि एवं ग्रामीण समस्याओं को मीडिया द्वारा दिए जाने वाले कवरेज की स्थिति को जानना।
- ग्रामीण विकास में मीडिया द्वारा प्रसारित संदेश की प्रभावोत्पादकता का पता लगाना।
- ग्रामीण विकास में मीडिया द्वारा उठाए गए मुद्दों, विषयों पर ग्रामीण जनमानस की प्रतिक्रिया जानना।
- सरकार द्वारा ग्रामीण विकास संबंधी उपलब्ध कराए गए योजनाओं का ग्रामीणों को प्राप्त लाभ को जानना।
- ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका को जानना।

राजस्थान में ग्रामीण विकास और मीडिया की भूमिका

ग्रामीण विकास और मीडिया की बात की जाए तो देश काल व परिस्थितियों तीनों से प्रति संपूर्ण आयामों में एक साथ ध्यान देते हुए प्रयासरत रहना होगा ऐसा तभी हो सकता है जब सूचना की उपलब्धता से शुरू करके जागरूकता का प्रसार व अनुभवों को बांटने तक की प्रक्रिया को शामिल किया जाए। सरकार द्वारा शुरू किए गए साक्षरता अभियान को टेलीविजन ने प्रोत्साहित कर जन–जन तक पहुंचने में अहम भूमिका निभाई है। मुख्य रूप से राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ऐसे ही सरकारी कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर टेलीविजन ने ग्रामीण जनता के दिलों में जगह बना ली है। आजकल गांव के विकास में कृषि सहित अन्य सामग्रियों पर कई शोध पत्र पत्रिकाएं व समाचार पत्रों का प्रकाशन विशेष महत्व दे रहे हैं।

नाटक–नौटंकी, गीत, संगीत, चौपाल, कृषि दर्शन, घर आंगन, युगवाणी जैसे अनेक कार्यक्रम के जरिए रेडियो ने ग्रामीण समाज की पुरानी दृष्टि में कब रंग भरने का कार्य किए हैं। आज आकाशवाणी के ग्रामीण कार्यक्रम ग्रामीण विकास के बहुत बड़े संसाधन के रूप में नजर आते हैं। आज रेडियो लगभग 99% जनता तक अनिवार्य रूप से अपनी तरंगों को प्रसारित कर रहा है और रेडियो के माध्यम से सरकार अपनी योजनाओं के लिए रेडियो का ही सहारा ले रही है।

आज भी ग्रामीणों के लिए यह न सिर्फ सूचना प्राप्त करने का सबसे विश्वसनीय एवं प्रमुख स्रोत है बल्कि उनके द्वारा ही सबसे ज्यादा रेडियो से प्रयोग में लाये जाते हैं।

चूँकि ग्रामीण विकास राष्ट्रीय जीवन का आधार है। इसके विकास के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। गाँव का विकास तभी हो सकता है जब कृषि का विकास हो। ग्रामीण विकास और समाचार पत्रों अथवा मीडिया के अंतर संबंधों को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है।

- मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह ग्रामीणों में फैली अज्ञानता को दूर करें।
- मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह विकास के प्रति जागरूक लोगों का मार्गदर्शन व निर्देशन करें।
- सामाजिक कुरीतियों को दूर करना मीडिया की जिम्मेदारी है।
- मीडिया की जिम्मेदारी है कि गांव के लोगों में तकनीकी शिक्षा का प्रचार प्रसार हो।
- कुटीर एवं लघु उद्योगों को गांव में विकसित एवं प्रोत्साहित करना मीडिया की जिम्मेदारी है।

सारणी 1

क्रम	विकास के प्रमुख कारक	ग्रामीण पहुँच (%)	मीडिया का प्रभाव स्तर	मुख्य भौगोलिक क्षेत्र	प्रमुख माध्यम
1	कृषि एवं सिंचाई जागरूकता	75%	उच्च	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, हाडौती	रेडियों, कृषिदर्शन, समाचार पत्र
2	शिक्षा एवं साक्षरता	60%	मध्यम–उच्च	शेखावाटी क्षेत्र, जयपुर संभाग,	समुदायिक रेडियो, सोशल मीडिया
3	स्वास्थ्य एवं स्वच्छता (SBM)	85%	ब्हुत उच्च	सम्पूर्ण राजस्थान	टीवी, विज्ञापन, दीवार लेखन, मुनादी
4	महिला सशक्तिकरण	45%	मध्यम	उदयपुर संभाग (मेवाड़), जोधपुर	स्वयं सहायता समूह, मोबाइल ऐप्स
5	कौशल विकास एवं रोजगार	40%	मध्यम	अलवर, भिवाड़ी ग्रामीण औद्योगिक क्षेत्र	डिजिटल

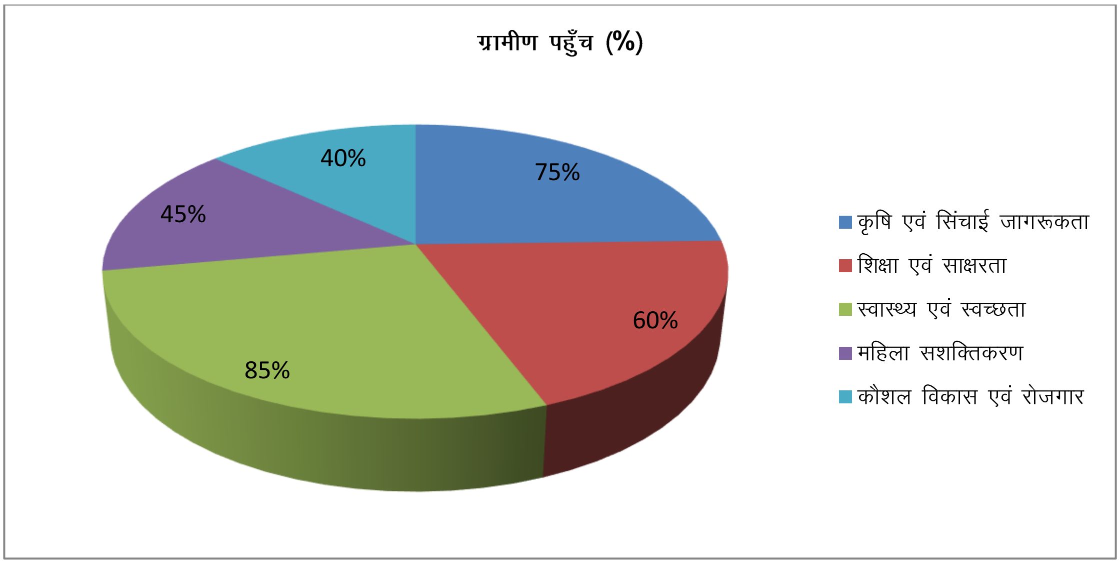

सारणी 2

वर्ष	ग्रामीण इन्टरनेट उपयोगकर्ता (अनुमानित %)	मोबाईल घनत्व (प्रति 100 व्यक्ति)	मुख्य प्रभाव
2021–22	32%	82.5	ईमित्र सेवाओं का विस्तार
2022–23	38%	84.1	चिरंजीवी योजना जैसी डिजिटल मैंपिंग
2023–24	45%	86.8	सेशल मिडिया (WhatsApp/ YouTube) का उदय
2024–25	52%	89.2	जन सूचना पोर्टल का व्यापक उपयोग
2025–26	58%	92.5	AI

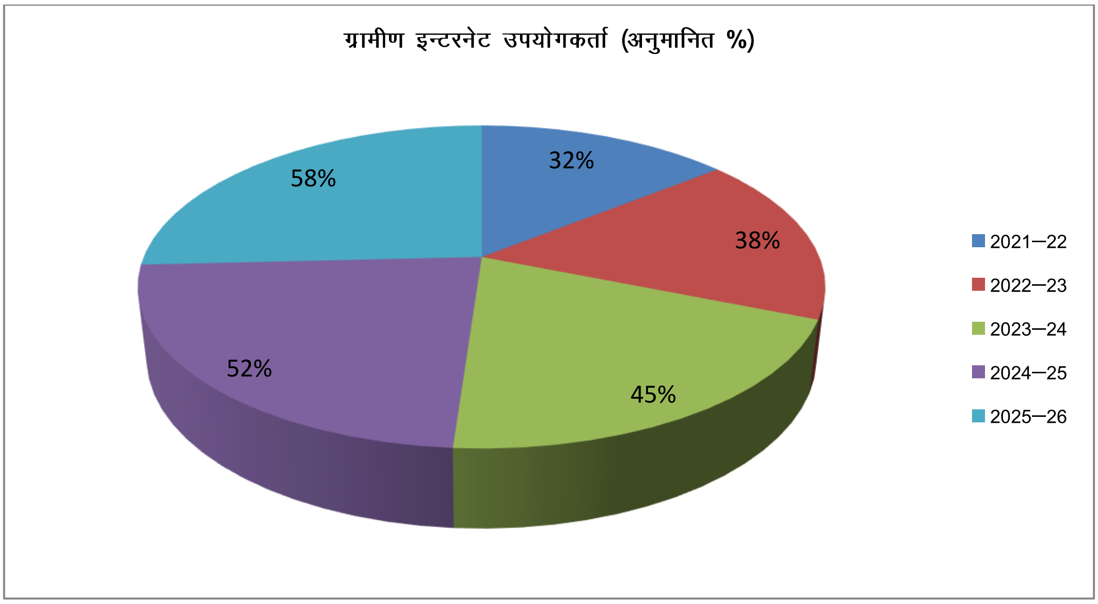

मीडिया माध्यमों की बदलती प्राथमिकता

माध्यम	2021 में भूमिका	2026 में भूमिका	परिवर्तन का कारण
प्रिन्ट (समाचार पत्र)	प्राथमिक सूचना स्त्रोत	पूरक एवं विश्लेषण	डिजिटल समाचार ऐप्स की गति
रेडियो, साम्यूनिटी रेडियो	मनोरंजन	आपदा प्रबंधन एवं स्थानीय संवाद	दुर्गम क्षेत्रों में उच्च पहुंच
सोशल मिडिया	व्यक्तिगत उपयोग	ई–गवर्नेंस एवं शिकायत निवारण	सीधा सरकारी संवाद (X/फेसबुक)
टेलीविजन	सामान्य जागरूकता	कौशल विकास (Skill Dev.)	चैनल समर्पित कृषि एवं शैक्षिक चैनल

अध्ययन की समस्या

राजस्थान के ग्रामीण विकास और मीडिया में अलवर जिले के ग्रामीण विशेषकर मेवात पर आधारित एक अध्ययन, वर्तमान अध्ययन की समस्या रही है। इसमें यह अध्ययन करना कि ग्रामीण विकास में मीडिया की क्या भूमिका होती है। वर्तमान में ग्रामीण प्रचार–प्रसार विकसित हो रहे हैं।

ग्रामीण विकास में मीडिया की क्या भूमिका होती है। सरकार द्वारा ग्राम विकास के लिए कौन–कौन सी योजनाएं चलाई जा रही है। इन योजना का लाभ किस प्रकार ग्रामीण प्राप्त कर रहे हैं तथा इन योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को किस प्रकार होती है। कौन इन योजनाओं से ग्रामीणों को अवगत कराता है। मीडिया आज लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और एक भ्रश्ट मुक्त समाज और राष्ट्र के विकास में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है।

अध्ययन से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि मीडिया किस प्रकार ग्रामीण की जीवन शैली को प्रभावित कर रहा है। ग्रामीणों में शिक्षा, मनोरंजन और कृषि संबंधी कार्यक्रमों को प्रसारित कर मीडिया उनका किस प्रकार विकास कर रहा है। ग्रामीणों के पिछड़ेपन के कारणों की जानकारी प्राप्त करके मीडिया के प्रकार से उनका निवारण करता है और सरकार द्वारा उनके विकास के लिए क्या अपील करता है, यह सब तत्वों के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।

शोध विधि

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया। विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, समाचार चैनलों, सोशल मीडिया आदि पर पूर्वांचल के ग्रामीण विकास को लेकर प्रकाशित खबरें, लेखों, रिपोर्ट की डॉक्यूमेंट्री का सहारा लिया गया। उनकी समशिक्षात्मक व्याख्या के लिए विद्वान लेखकों के विचारों के आधार पर विषय को समझने का प्रयास किया गया है ताकि संबंधित विषय के साथ न्याय किया जा सके।

अध्ययन का महत्व

आजादी के पूर्व मीडिया का उद्देश्य देश को आजाद करना था परंतु 15 अगस्त 1947 के साथ उद्देश्य विकास में बदल गया। भारत को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए मीडिया ने भी अपने कार्यों द्वारा इसको सफलता दिलाने में अपने भूमिका अदा की है। आज हर तरफ मीडिया है। यह लोकतंत्र का स्तंभ है। समाज का प्रहरी है। सूचना शिक्षा मनोरंजन, इसको मूल उद्देश्य दे रहे हैं। यह लोगों को जागरूक करने, प्रभावित करने, उनके रुचियां का परिष्कार करने, जननिर्माण करने के साथ ही स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक जिम्मेदारियों के अलावा जीवन के हर क्षेत्र में यह सहयोग और मार्गदर्शन कर रहा है। मीडिया आज एक ऐसे माध्यम बन चुका है जिनके सहयोग से पिछड़ा क्षेत्र, सरकार और लोगों तक अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं। उनकी तमाम समस्याओं

का समाधान भी निकल रहा है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम के आरंभिक स्तर पर की यह अनुभव किया गया था कि मीडिया के सहयोग के बिना इस कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण नहीं बनाया जा सकता।

आज राजस्थान सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खाद्य, सिंचाई, अधिक उत्पादन देने वाली चीजों और फसलों की सुरक्षा के साधनों पर व्यय किये जा रहे हैं परंतु वे उतना लाभ नहीं पहुँचा पा रहे है। वहीं मीडिया अपनी प्रभावोत्पादकता एवं विश्वसनीयता के कारण समाज में एक स्थान और सम्मान प्राप्त कर चुकी है। इसी कारण राजस्थान में ग्रामीण विकास में मीडिया के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। इसी को ध्यान में रखते हुए शोध विषय "राजस्थान में ग्रामीण विकास और मीडिया" का चयन किया गया।

- मीडिया की भूमिका एवं रूप से भारत में ही नहीं मीडिया राजस्थान के ग्रामीण विकास में एक शक्तिशाली उपकरण साबित हुआ है। ग्रामीण समुदाय को सूचना, जागरूकता और ज्ञान प्रदान करके उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहायता करता है।
- सूचना का प्रसार– मीडिया में ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी योजना, कृषि तकनीक, स्वास्थ्य, संबंधी मुद्दों और सामाजिक परिवर्तन के बारे में जागरूकता बढ़ाई है।
- सशक्तिकरण– मीडिया ने ग्रामीण महिलाओं और वंचित वर्गों को सशक्त बनाया है। उन्हें उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया है और सामाजिक बदलाव लाने पर प्रेषित किया है।
- विकास में बाधाएँ– हालांकि मीडिया में भेदभाव, झूठी खबरें और कम पहुँच जैसी चुनौतियां भी मौजूद हैं जो ग्रामीण विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है।
- भविष्य की दिशा– भविष्य में डिजिटल मीडिया और सामाजिक मीडिया का उपयोग ग्रामीण विकास को और अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। इन माध्यमों से ग्रामीण समुदाय की लक्षित सूचना और सेवाएं प्रदान की जा सकती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला निकाला जा सकता है कि राजस्थान के ग्रामीण विकास में मीडिया की अहम भूमिका है।

- यह ग्रामीण समुदायों को सूचना, जागरूकता व ज्ञान प्रदान कर जीवन स्तर बेहतर बनाने में सहायक है।
- सूचना का प्रसार मीडिया ने ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी योजनाओं में कृषि तकनीकों, स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों में जागरूकता बढ़ाई गई।
- महिला सशक्तिकरण मीडिया ने ग्रामीण महिलाओं और वंचित वर्गों को सशक्त बनाया है एवं अधिकारों के प्रति जागरूक करता है।
- विकास में बाधाएँ भी दर्शाई गई है जैसे मीडिया भेदभाव झूठी खबरें और दूर–दराज के क्षेत्रों में पहुंच की कमी।
- ग्रामीण विकास को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए डिजिटल मीडिया और सामाजिक मीडिया का उपयोग किया जा सकता है। अर्थात भविष्य में डिजिटल मीडिया और सामाजिक मीडिया का उपयोग ग्रामीण विकास को और अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ाने में किया जा सकता है। इन स्रोतों के माध्यम से ग्रामीणों को लक्ष्य आधारित सूचना एवं सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं।

सुझाव

- डिजिटल सशक्तिकरण ग्रामीण राजस्थान में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर डिजिटल साक्षरता का प्रभाव डाला जा सकता है।

- स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से ग्रामीण युवाओं की पत्रकार के रूप में भूमिका निभाई निभाई जा सकती है।
- मीडिया और सरकारी योजनाओं के द्वारा ग्रामीण विकास स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन तथा स्वास्थ्य योजनाओं के प्रचार प्रसार में पारंपरिक लोक कथाओं और रेडियो की भूमिका।
- पारंपरिक और स्थानीय मीडिया के माध्यम से विकास संदेशों का संचार करना।
- संपूर्ण देश में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कृषि दर्शन कार्यक्रम का प्रभाव ग्रामीण जनता पर पड़ रहा है। ऐसे कार्यक्रमों को प्राइवेट चैनल पर शुरू करने की आवश्यकता है ताकि डीटीएच सेवाओं से जुड़े ग्रामीण उपभोक्ताओं को और अधिक लाभ लाभ प्राप्त हो सके।
- सूचना क्रांति के युग में आज भी अधिकांश क्षेत्र इंटरनेट सेवाओं से दूर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लेख अमर उजाला, अधूरी तैयारियाँ, उपेंद्र प्रसाद 22.12.11
2. यूपी आरटू एम.जे.एम.सी. नोट्स– वैश्वीकरण और मीडिया
3. आनंद प्रसाद, गांव में सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन जयपुर 1992।
4. डीसी पंत– भारत में ग्रामीण विकास, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 2001।
5. डॉ संतोष कुमार प्रधान, ग्रामीण विकास, जनजागरण और मीडिया की भूमिका 2016।
6. बसंती लाल बाबेन – पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनाएं, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2001।
7. रविंद्र शर्मा– ग्रामीण स्थानीय प्रशासन, प्रिंटवैल पब्लिकेशन, जयपुर 1985।

❑❑❑